61

शैतान का बान्धा जाना

(20:1-3)

प्रकाशितवाक्य 20 के बारे में जी.बी.केयर्ड ने लिखा है, ''अब हम उस पद पर आते हैं जो सनकी और कट्टर लोगों का स्वर्गलोक रहा है। ...''[1] जॉन रिस्से ने इसे ''सनकी लोगों के लिए खेल का मैदान'' कहा है।[2] इस ''खेल का मैदान'' की मुख्य बात अध्याय में वर्णित ''हज़ार वर्ष'' रहा है। फ्रैंक पैक ने कहा, ''इन कुछ आयतों का इस्तेमाल कई लोग पूरी बाइबल के सबसे महत्वपूर्ण भाग और पूरे धर्मशास्त्र की व्याख्या की कुंजी के रूप में करते है।''[3]

प्रकाशितवाक्य 20 महत्वपूर्ण है परन्तु एक हज़ार वर्ष के संकेत का इस्तेमाल के कारण नहीं। तुलनात्मक रूप में ''हज़ार वर्ष'' पर बाइबल की अन्य बातों से अधिक ही ज़ोर दिया जाता है। डगलस एज़ल के अनुसार एक बार ब्रश चलाने के मोह के कारण कई लोग परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई तस्वीर पर ध्यान नहीं दे पाते। उसने कहा कि यह तो ''पूंछ के कुत्ते को हिलाने वाली बात है।''[4]

प्रकाशितवाक्य 20 से जुड़े विवाद के कारण मुझे ''मिलेनियम के प्रश्न'' पर उससे अधिक स्थान देना पड़ेगा, जितना मैं देना चाहता था। उम्मीद है कि इससे विजय का संदेश धूमिल नहीं होगा। डब्ल्यू.बी. वेस्ट जूनियर ने ज़ोर दिया है कि ''पहली शताब्दी की ऐनकें लगाकर अध्ययन करें तो यह सबसे आसान अध्यायों में से एक है।''[5] हो सकता है उसने मामले को कुछ अधिक ही बढ़ा दिया हो परन्तु अपने अध्ययनों में इस्तेमाल किए जाने वाले नियमों को देखें तो यह उतना कठिन नहीं है जितना लगता है।

इस पाठ में पहले तो मैं आपको उन कुछ नियमों का स्मरण कराना चाहता हूं। फिर हम 1 से 3 आयतों को समझने का प्रयास करेंगे जो शैतान के बान्धे जाने की बात करती हैं।

पृष्ठभूमि

भाषा अभी भी सांकेतिक है

पहले तो याद रखें कि हम एक अपोकलिप्टिक पुस्तक का अध्ययन कर रहे हैं, जिसमें

संकेतों के माध्यम से संकेत दिया गया है।[6] जैसा कि जिम मैक्गुइगन ने ध्यान दिलाया है कि "हम तस्वीरों को देख रहे हैं" और किसी तस्वीर को देखने पर हमें यही कहना चाहिए, "यह वही तस्वीर है, परन्तु इसके द्वारा बताई जाने वाली सच्चाई कहां है?"[7] इस सम्बन्ध में अध्याय 20 किसी प्रकार प्रकाशितवाक्य के किसी अन्य अध्याय से अलग नहीं है।

कालक्रम अभी भी आकस्मिक है

फिर याद रखें कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कठोर कालक्रम बनाने का कोई प्रयास नहीं करती। आरम्भ से अन्त तक यह कालक्रमिक *नहीं* है।[8] उदाहरण के लिए कालक्रम के अनुसार अध्याय 12 यीशु के जन्म का पूरा-पूरा समर्थन करता है चाहे यह प्रकाशितवाक्य के मध्य में आता है।[9] वास्तव में थोड़ा से अलग दृष्टिकोण से पुस्तक में बार-बार उसी मूल समय की अवधि की बात की गई है। पहले दी गई रूपरेखा तो देखें,[10] तो आप पाएंगे कि अध्याय 17 से 19 एक भाग के रूप में दिए गए है ("कलीसिया के अधिकतर शत्रु नष्ट हो जाते हैं"), जबकि 20 से 22 अध्यायों से एक नया भाग बनता है ("अजगर के विनाश के बाद नया आकाश और पृथ्वी")। अन्य शब्दों में हम अध्याय 20 के साथ (कालक्रमिक) आरम्भ करते हैं।

यह महत्वपूर्ण क्यों है? क्योंकि कुछ (गलत) मान्यताओं के लिए यह दावा करना आवश्यक है कि अध्याय 20 कालक्रम के अनुसार अध्याय 19 के बाद आता है और अध्याय 20 की बातें कालक्रम के अनुसार है। उदाहरण के लिए कई लोग यह ज़ो र देते हैं कि अध्याय 19 का अन्त द्वितीय आगमन को दर्शाता है, जिसका अर्थ यह हुआ कि कालक्रम के अनुसार यह शैतान के बान्धे जाने से अध्याय 20 के बाद आता है। उनका कहना है कि इसके बजाय यह हज़ार वर्ष के राज्य अर्थात "थोड़ी देर" (20:3) और न्याय के बाद आता है। परन्तु वचन कालक्रम के इस ढंग से मेल नहीं खाता।[11]

अध्याय 20 कालक्रम के अनुसार अध्याय 19 के बाद आता है या नहीं इस पर विचार करने की एक और बात है। अध्याय 19 के पक्षियों को "... क्या छोटे, क्या बड़े *सब* लोगों का मांस" खाने के लिए बुलाया गया था (19:18), जो उन्होंने खाया भी (19:21)। यदि "सब लोग" नष्ट हो गए थे और अध्याय 20 कालक्रम के अनुसार अध्याय 19 के बाद आता है तो वे "जातियां" कौन थी, जिन्हें शैतान बान्धे जाने के समय भरमा रहा था (20:3)?[12]

ज़ोर अभी भी शत्रुओं पर विजय पर है

वचन चरम की ओर ला रहा है। मेमने के शत्रुओं का परिचय इस क्रम में दिया गया था: अजगर, दो पशु और बड़ा नगर बाबुल। उलटे क्रम में, उनका सामना अपने विनाश से हुआ: अध्याय 17 और 18 वाला बड़ा बाबुल और अध्याय 19 वाले दो पशु। अजगर के गिराए जाने का समय था। यह *आवश्यक* था कि वह गिरे। अन्य शत्रुओं का समर्थन करने वाली शक्ति वही था। जब तक उसे वश में नहीं किया जाता तब तक स्थायी महत्व की कोई

बात नहीं की जानी थी। यदि उसे दण्ड से बचने की अनुमति दी जाति तो उसने परमेश्वर के लोगों को सताने के और तरीके ढूंढ़ लेने थे।

रेअ समर्स ने ज़ोर दिया कि "इस अध्याय की पहली दस आयतों का मुख्य विषय हज़ार वर्ष का राज्य नहीं बल्कि *शैतान का फैंका जाना* है।"[13] "हज़ार वर्ष" का संकेत इससे मेल खाता है।

काश, मेरे पास यह बताने के लिए शब्द होते कि अध्याय 20 कितना महत्वपूर्ण कितना रोमांचकारी है, इसलिए नहीं कि इसमें एक हज़ार वर्ष का उल्लेख है, बल्कि इसलिए क्योंकि इसमें शैतान के अन्त की घोषणा है, उसी शैतान की, जिसने हव्वा को भरमाकर संसार पर शाप लाया था (उत्पत्ति 3; 2 कुरिन्थियों 3:11); शैतान की, जिसके कारण संसार में हर प्रकार के पाप और पीड़ा आई; शैतान के अन्त की जिसने पीढ़ी दर पीढ़ी, सदी दर सदी लोगों के जीवन बर्बाद किए; शैतान के अन्त की जिसने हमारे *अपने* जीवनों में लज्जा और पीड़ा लाई है। यह भयानक, खतरनाक, अनिष्टकारी दुर्भावपूर्ण जीव एक दिन उनके सामने से जो प्रभु की मानते हैं, निकाला जाएगा! गया! हमेशा के लिए गया! कितना अदभुत समाचार है! "और उनका भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यवक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा, और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे" (20:10)।

कुल प्रभाव आज भी सबसे महत्वूपर्ण है

मैं बेईमान होता यदि मैंने यह माना न होता कि इस अध्याय में कठिन भाग हैं। उनमें से एक शैतान का छोड़ा जाना है "जब हज़ार वर्ष पूरे हो चुकेंगे; तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा" (20:7; देखें आयत 3)। इस अध्याय का अर्थ कोई कुछ भी क्यों न निकाले, उसमें कुछ न कुछ कमी अवश्य रहेगी। परन्तु क्या यह हर अध्याय में नहीं होता? एक बार फिर मैं आपको याद दिलाता हूं कि प्रकाशितवाक्य के किसी भी पद का मूल संदेश अस्पष्ट विवरणों में नहीं बल्कि मन पर पड़ने वाले उस कुल प्रभाव में है।

अध्याय 20 पढ़ने के लिए कुछ समय निकालें और उस पर विचार करें। आपको उसमें क्या संदेश मिलता है? निश्चय ही यह संदेश है कि जो लोग मेमने की बात मानते हैं वे जीतते हैं परन्तु जो शैतान की बात मानते हैं वे हारते हैं! अभी के लिए बेड़ियों, सिंहासनों और समय के कालों को भूल जाएं। इस विचार को अपने दिमाग में रख लें कि *जो लोग मेमने की बात मानते हैं वे जीतते हैं परन्तु जो शैतान की बात मानते हैं वे हारते हैं!* अध्याय 20 से परमेश्वर आपको यही सिखाना चाहता है। पहली शताब्दी के लिए यह महत्वपूर्ण संदेश था। उतना ही महत्वपूर्ण आज के लिए भी है!

बान्धा जाना (20:1-3)

इन विचारों को ध्यान में रखते हुए 20:1-3 में देखते हैं। इन आयतों के हमारे अध्ययन से अध्याय के परिचय के साथ कई नियमों की समझ आती है।

अध्याय 20 आरम्भ होता है, "फिर मैंने एक स्वर्गदूत[14] को स्वर्ग से उतरते देखा;[15] जिसके हाथ में[16] अथाह कुंड की कुंजी, और एक बड़ी ज़ंजीर थी" (आयत 1)। आपको याद होगा कि अथाह कुंड (जिसे कई बार "पाताल" भी कहा जाता है) इस वर्तमान युग में दुष्टों का सांकेतिक निवास है।[17] पाताल नरक नहीं है। शैतान को इस अध्याय की आयत 10 से पहले न बुझने वाली आग की झील में नहीं डाला जाएगा।

अथाह कुंड के बारे में पहले हमने अध्याय 9 में पढ़ा था, जहां एक तारा पृथ्वी पर गिरा और "उसे अथाह कुण्ड की कुंजी दी गई" (9:1)। जब इस "तारे" (शायद स्वर्गदूत?) ने अथाह कुण्ड को खोला, तो उसमें से खतरनाक टिड्डियां बाहर निकल आईं। अध्याय 20 वाला स्वर्गदूत अध्याय 9 का "तारा" हो भी सकता है और नहीं भी। वह जो भी था वह परमेश्वर का दूत था और इस कारण परमेश्वर के कार्य को कर पाने में सक्षम था। उसका लक्ष्य शैतान को हराना था।

सम्मानीय पराजय होती हैं और अपमानजनक पराजय भी होती हैं। शैतान को इस दर्शन में हार ही नहीं, बल्कि शर्मिंदगी भी हुई। आखिर उसकी सब डींगें (तारों को आकाश से समेट देना [12:4], इत्यादि), केवल एक अनाम स्वर्गदूत ने ही धराशाई कर दीं!

सांकेतिक कुंजी और ज़ंजीर

स्वर्गदूत के पास "अथाह कुण्ड की कुंजी" थी, जो इस बात का संकेत हैं कि उसे इस पर अधिकार यानी इसे खोलने या बन्द करने का अधिकार दिया गया था।[18] इसके अलावा उसके पास शैतान को बान्धने में इस्तेमाल के लिए एक बड़ी ज़ंजीर थी। यह वैसी ज़ंजीर थी जिसका इस्तेमाल रोमी लोग कैदियों को बान्धने के लिए करते थे। (प्रेरितों 12:7; 28:20 में इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है।)

आइए हम यह पूछने के लिए रुकते हैं कि "क्या यह कुंजी वास्तव में थी? क्या ज़ंजीर वास्तव में थी?" वेस्ट ने इन प्रश्नों पर दबाव दिया: "यदि वे वास्तविक थीं तो कुंजी और ज़ंजीर कैसी थीं? क्या वे लोहे की थीं? क्या वे चांदी की थीं? क्या वे सोने की थीं? क्या वे लकड़ी की थीं? या फिर कैसी थीं?"[19] पहली तीन आयतों के बारे में ऐसे कई और सवाल हो सकते हैं: अथाह कुण्ड गहरा था या भूमि में गहरा सुराख था? क्या अजगर हड्डी मांस का बना जीव था? एक बार फिर हमें ध्यान आता है कि हम संकेतों वाली अपोकलिप्टिक भाषा की बात कर रहे हैं।

मूलवादी (विशेषकर प्रीमिलेनियलस्टि) लोग प्रकाशितवाक्य के शब्दों को "आत्मिक रूप" देने वालों (उनके अनुसार) के बारे में तिरस्कारपूर्ण बातें करते हैं। वे बड़े गर्व से दावा करते हैं कि केवल वे और वे ही "वचन को अक्षरश: लेते" हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि वे प्रकाशितवाक्य की किसी भी बात को जो उनके विशेष दृश्य से मेल न खाती हो, "आत्मिक बनाने" में झिझक नहीं करती। वे मानते हैं कि कुंजी येल ताले खोलने वाली नहीं है,[20] और ज़ंजीर लोहे की बनी नहीं, और न ही अथाह कुण्ड बहुत गहरा गड्ढा है।

आइए कहानी में वापस चलते हैं: स्वर्गदूत ने "उस अजगर, और अर्थात, पुराने सांप

को, जो इबलीस और शैतान है; पकड़'' लिया (आयत 2क)। विरोधी को पहचानने में हमें देर नहीं लगती। इन आसान वाक्यांशों में 12:9 में उसका परिचय दिया गया था। हम पहले भी बता चुके हैं कि वह ''स्वर्गीय लड़ाई में मीकाइल से पराजित होने वाला अजगर (12:7, 8), अर्थात वह सांप है, जिसने मसीहा के समाज को प्रलय से मिटाने की कोशिश की थी (12:15) और वह शैतान है जिसे मालूम है कि उसका समय थोड़ा है (12:12)।''[21]

सांकेतिक हज़ार वर्ष

शैतान को पकड़ लेने के बाद स्वर्गदूत ने उसे ''हज़ार वर्ष के लिए बान्ध दिया'' (आयत 2ख)। यहां पहली बार प्रसिद्ध (या अप्रसिद्ध) ''हज़ार वर्ष'' का उल्लेख मिलता है। इस पर मैं विस्तार से चर्चा अगले दो पाठों में करूंगा, परन्तु अभी मैं आगे बढ़कर एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछना चाहता हूं कि क्या यह वास्तविक हज़ार वर्ष है ? यदि कुंजी, ज़ंजीर, अथाह कुण्ड और अजगर सांकेतिक है, तो किस आधार पर कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि हज़ार वर्ष समय का एक काल है ? प्रकाशितवाक्य में से गुज़रते हुए सैकड़ों सांकेतिक अंक आए हैं। हमने ज़ोर दिया है कि सात पवित्र आत्माएं नहीं हैं, यानी 1:4 वाला ''सात'' अंक सांकेतिक है। हमने इस बात पर ज़ोर दिया है कि स्वर्ग में जाने वाले 1,44,000 ही नहीं होंगे, यह संख्या तो (जैसा कि अध्याय 7 और 14 में इस्तेमाल किया गया है) *सब* उद्धार पाए हुओं के लिए सांकेतिक है। यदि इन संख्याओं का इस्तेमाल सांकेतिक है तो किसी को यह क्यों सोचना चाहिए कि प्रकाशितवाक्य 20 अध्याय वाली ''एक हज़ार'' संख्या का अर्थ एक हज़ार ही है ?[22] थॉमस टॉरेंस ने लिखा है:

> यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यदि हम दस सिरों और सात सिरों वाले पशु को अक्षरश: नहीं ले सकते है तो हमें इस हज़ार वर्ष का अर्थ भी अक्षरश: लेने का कोई अधिकार नहीं है। यह तो इसे इसके अपोकलिप्टिक सैटिंग और स्थान से इतिहास के साधारण ज़हाज पर नीचे लाने के लिए ... बाहर निकालना है, जैसे कि इसे संसार के अन्त के पास ... सांसारिक गणित द्वारा चलाकर गणनाओं में विकृत किया जा सकता हो।[23]

यदि ''एक हज़ार'' अंक सांकतिक है (इसे और कुछ मानने का कोई कारण भी नहीं है), तो यह किस बात का संकेत है ? प्रकाशितवाक्य के परिचय में हमने देखा था कि ''दस'' सम्पूर्णता का संकेत देने वाला अंक है, जो सम्भवतया इस तथ्य से निकला है कि व्यक्ति की दस उंगलयिां होती है। हमने यह भी ध्यान दिया था कि दस के गुणांकों (एक सौ या एक हज़ार) का इस्तेमाल इस अवधारणा को गहरा अर्थ देता है।[24] ''एक हज़ार'' (दस गुणा दस गुणा दस) कहने का अर्थ है ''सम्पूर्णता की सम्पूर्णता की सम्पूर्णता।''[25] ''एक हज़ार वर्ष के लिए'' शैतान का बान्धा जाना यह कहने का सांकेतिक ढंग है कि उसे *पूरी तरह से* बान्ध दिया गया था।

सांकेतिक बान्धा जाना

उस अन्तिम वाक्य से कोई निष्कर्ष निकालने से पहले हमें यह विचार कर लेना आवश्यक है कि "बान्धा जाना" सांकेतिक है और चाहे यह पहले ही हो चुका है या मसीह के वापस आने के समय होगा। पवित्र शास्त्र में केवल एक और जगह जहां हम शैतान के बान्धे जाने के बारे में पढ़ते हैं, मत्ती 12 में (मरकुस 3 और लूका 11 के संदर्भ सहित) है। उस अवसर यीशु पर शैतान की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकालने का आरोप लगा था। अपने उत्तर में उसने पूछा था, "कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल कैसे लूट सकता है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को बान्ध न ले? और तब वह उसका घर लूट लेगा" (मत्ती 12:29)। यीशु के उदाहरण में वह "बलवन्त" और शैतान में अर्थात "उसका घर लूटने" और दुष्टात्माओं को निकालने में समानता बना रहा था। इस आयत से हम निष्कर्ष निकालते हैं कि यीशु दुष्टात्माओं को इसलिए निकाल पाया क्योंकि उसने बलवन्त (अर्थात शैतान) को "बान्ध" दिया *था*।

वचन सिखाता है कि शैतान का "बान्धा जाना" यीशु के जन्म से आरम्भ हुआ और उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के साथ चरम को पहुंचा। "सब प्रतिज्ञाओं की जननी" (उत्पत्ति 3:15) में यह भविष्यवाणी की गई थी कि स्त्री की संतान (यीशु) ने सर्प (शैतान) का सिर कुचलना था, चाहे इसमें उसकी एड़ी पर डंक लगना था। अधिकतर विद्वान इस बात से सहमत हैं कि क्रूस पर मरने और फिर जी उठने के समय यह शैतान की शक्ति और अधिकार को यीशु का "मृत्यु का प्रहार" था । मत्ती 12 और ऐसी आयतों से स्पष्ट है कि यह प्रतिज्ञा पूरी हुई थी।

यीशु द्वारा सत्तर चेलों को भेजे जाने के बाद वे यह कहते हुए आनन्द के साथ लौटे थे कि "हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं" (लूका 10:17)। यीशु का उत्तर था "मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था" (आयत 18)। जैसा कि पिछले पाठ में बताया गया था यह "गिरना" शैतान के मूल की नहीं, बल्कि यीशु के चेलों की क्षमता से मनुष्यजाति पर उसकी पकड़ कम करने की बात है।[26]

यूहन्ना 12 में यीशु ने यह बताते हुए "कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा" (आयतें 32, 33), कहा कि "अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा" (आयत 31)। यूहन्ना 16 में उसने अपने प्रेरितों को बताया कि "संसार का सरदार दोषी ठहराया गया" (आयत 11)।

पौलुस ने यीशु की मृत्यु के विषय में (कुलुस्सियों 2:14) यह ध्यान दिलाते हुए लिखा कि उसकी मृत्यु ने "प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतार" दिया (आयत 15)। यूहन्ना ने कहा, "परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे" (1 यूहन्ना 3:8)। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने बताया कि यीशु इसलिए मरा "ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दो" (इब्रानियों 2:14)।

अन्त में हमें प्रकाशितवाक्य 12 की आयत मिलती है। वहां शैतान के "फैंके जाने"

की बात कही गई है और विजय ''मेमने के लोहू के कारण'' हुई बताई जाती है (आयतें 10, 11)।[27] शैतान पर यह विजय यीशु के पहले आगमन से जुड़ी है न कि उसके दूसरे आगमन से: अध्याय का आरम्भ यीशु के जन्म से (आयतें 1, 5) और चरम यीशु की मृत्यु, जी उठने और स्वर्ग पर उठाए जाने के हवाले से होता है (आयतें 5, 11)।

शैतान के ''हज़ार वर्ष ... कैद'' में पड़े होने का अर्थ *जो भी* है, इसलिए यह यीशु के देह धारण करने से आरम्भ होने वाले समय के काल से जुड़ा है। यह यीशु की वापसी के बाद किसी काल्पनिक युग की बात नहीं है।

परन्तु हमने यह नहीं बताया कि शैतान को किस अर्थ में बान्धा गया। कइयों का दावा है कि ''बान्धना'' शब्द का अर्थ है ''अयोग्य बनाना,'' जिस कारण वे इस विचार का मज़ाक उड़ाते हैं कि शैतान अब बान्धा गया है। वे बाइबल की उन आयतों की ओर ध्यान दिलाते हैं जिनमें कहा गया है कि शैतान संसार में अभी भी कार्य कर रहा है[28] और पूछते हैं, ''आप कैसे कह सकते हैं कि शैतान बान्धा गया है क्योंकि उसने तो संसार को इतना परेशान किया हुआ है?''[29] एक लेखक ने ताना मारा, ''यदि शैतान आज बान्धा गया है तो वह किसी बहुत बड़ी ज़ंजीर से बन्धा हुआ होगा!''

यूनानी शब्द के अनुवाद ''कैद'' का अर्थ ''पंगु'' या ''काम के अयोग्य'' नहीं है। उस ज़ंजीर के सम्बन्ध में जिससे पौलुस बन्धा था इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है (प्रेरितों 28:20) और वह सक्रिय जीवन में भाग ले रहा था, यह अलग बात है कि इस प्रकार कैद के दौरान उसकी गतिविधियां सीमित हो गई थीं।[30] फिर रोमियों 7:2 में एक प्रतीकात्मक अर्थ में इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जहां पत्नी के विषय में कहा गया है कि वह ''व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उससे बन्धी है।'' ''बन्धी'' स्त्री हर प्रकार से सीमित नहीं थी, परन्तु एक विशेष प्रकार से वह सीमित थी: व्यवस्था उसे अपने पति के जीते जी किसी और से विवाह करने की अनुमति नहीं देती थी (रोमियों 7:3)।

वचन में यहां शैतान के ''बन्धा'' होने को परिभाषित तथा स्पष्ट किया गया है: आयत 3 कहती है कि उसे बान्ध दिया गया ''कि वह लोगों को फिर न भरमाए।''[31] आयत 8 कहती है कि छोड़े जाने पर एक बार फिर वह ''जातियों को भरमा'' सकता था। इसका अर्थ यह हुआ कि शैतान को हर अर्थ में नहीं बान्धा गया था। उसे तो जातियों को भरमाने के मामले में बान्धा गया था।

आइए देखते हैं कि पीछे ध्यान दी गई आयतों के अलावा क्या हम इसे मसीह में परमेश्वर की सनातन मंशा की बात करने वाली अन्य आयतों[32] के साथ जोड़ सकते हैं:

शैतान के कारण संसार में मृत्यु और पाप आए। इनके द्वारा शैतान ने मनुष्यजाति पर अपनी पकड़ बनाई और मज़बूत की। परन्तु परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि ''स्त्री की सन्तान'' आकर शैतान की शक्ति को ज़बर्दस्त प्रहार मारेगी। उसने और प्रतिज्ञा की कि यह ''सन्तान'' मनुष्यजाति को आशीष देगी (उत्पत्ति 22:18), यानी उन सबको जो शैतान के द्वारा प्रताड़ित किए गए हैं।

इन प्रतिज्ञाओं को व्यवहार में लाने के लिए, परमेश्वर ने एक जाति अर्थात इस्राएल जाति (यहूदियों) को अलग किया। पुराने नियम के समयों में शेष संसार को प्रभावित करने के छिटपुट प्रयास किए गए; परन्तु कुल मिलाकर अज्ञानता ही अज्ञानता थी और शैतान ने लोगों में अपनी जगह बना ली।

अन्त में यीशु संसार में आया वह शैतान की शक्ति को नष्ट करने के उद्देश्य वाली प्रतिज्ञा लेकर आया। इस बात को जानते हुए शैतान ने उसे नष्ट करने के यीशु के एजेंडे को गड़बड़ाने की हर कोशिश की। ऐसा करते हुए शैतान को हार ही मिलती रही। यानी जब भी उसने यीशु से सीधे पाप करवाने की कोशिश की उसे सफलता नहीं मिली (मत्ती 4)। जब उसने परोक्ष रूप से यीशु से पाप करवाने की कोशिश की, तो असफल रहा (मत्ती 16:23)। वह मसीह और उसके चेलों को अपने दुष्ट साथियों को निकालने से भी रोक न पाया। नियन्त्रण हाथ से निकलता देख शैतान ने यीशु को रोमी क्रूस पर चढ़ाने के निराशाजनक प्रयास में यहूदा और यहूदी अगुओं का इस्तेमाल किया।

जो बात शैतान की समझ में नहीं आई (वह सर्वज्ञ नहीं है) वह यह है कि यीशु की मृत्यु के बाद उसका जी उठना उसकी पराजय की मुख्य बातें होनी थीं।[33] यीशु की मृत्यु ने पाप की शक्ति को नष्ट कर दिया था; यीशु के पुनरुत्थान ने मृत्यु की शक्ति को नष्ट कर दिया था। "हे मृत्यु तेरी जय कहां रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है" (1 कुरिन्थियों 15:55-57)।

यीशु के बलिदान के लाभ यहूदियों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी मनुष्यजाति के लिए थे। उसके द्वारा हर आज्ञाकारी विश्वासी शैतान के बन्धनों को फैंक सकता है। इसलिए यीशु ने अपने चेलों को उद्धार का संदेश हर जाति के लोगों तक ले जाने के लिए कहा (मत्ती 28:18-20)। जब पतरस ने पहली बार सुसमाचार का प्रचार किया तो उसने ज़ोर दिया कि उद्धार केवल यहूदियों के लिए नहीं, बल्कि "दूर-दूर के" सब लोगों के लिए है (प्रेरितों 2:39)।

शैतान ने आरम्भिक मसीही लोगों को सताकर सुसमाचार के प्रचार को निष्फल करने की कोशिश की परन्तु उसके प्रयास किसी काम न आए। सताव से सुसमाचार यरूशलेम तक रहने के बजाय नई-नई जगह में पहुंच गया (प्रेरितों 8:1-4)। प्रभु ने उस समय शैतान के सबसे बड़े हथियार अर्थात तरसुस वासी शाऊल को बदल दिया। यीशु ने शाऊल (जो बाद में पौलुस कहलाया) को अन्यजातियों (गैर-यहूदियों) में जाने की आज्ञा दी:

> ... मैंने तुझे इसलिए दर्शन दिए हैं, कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊं, ... कि तू उन की आंखें खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और *शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर* फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं (प्रेरितों 26:16-18)।

सुसमाचार जहां भी गया, इसे स्वीकार करने वालों के मन से अन्धेरा छंट गया और रोशनी हो गई (कुलुस्सियों 1:13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:4; 1 पतरस 2:9)। सैकड़ों बल्कि हज़ारों ने "मेमने के लहू के कारण" (प्रकाशितवाक्य 12:11) शैतान पर विजय पाई। पहली शताब्दी खत्म होने से पहले पौलुस ने कहा था कि सुसमाचार "आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में" सुनाया जा चुका था (कुलुस्सियों 1:23)। शैतान को एक घूंसा पड़ा था जिससे वह कभी उभर नहीं पाएगा। अध्याय 12 कहता है कि अब हम एक घायल, हारे हुए शत्रु से लड़ रहे हैं।[34] अध्याय 20 मुख्यतया वही सच्चाई बताता है परन्तु अलग आकृति का इस्तेमाल करता है कि अब हम *बन्धे हुए* शत्रु से लड़ रहे हैं।

क्या इसका अर्थ यह है कि शैतान अब सक्रिय नहीं रहा है? कदापि नहीं। क्या इसका अर्थ यह है कि शैतान कलीसिया और मसीही लोगों का नाश करने की कोशिश नहीं कर रहा है?[35] नहीं। क्या इसका अर्थ यह है कि शैतान अधिक से अधिक लोगों को अपने साथ नरक में ले जाने से संतुष्ट नहीं है? नहीं। ओवन क्राउच ने इसे इस प्रकार कहा है: शैतान को अब "सीमित कर दिया गया" है "खत्म नहीं।"[36]

शैतान के "बान्धे जाने" का अर्थ है कि उसकी शक्ति को कम कर दिया गया है। प्रभु ने शैतान को कई प्रकार से सीमित किया है, जिसमें वह वचन को नष्ट नहीं कर सकता (मत्ती 24:35; 1 पतरस 1:25)। वह कलीसिया को नष्ट नहीं कर सकता (मत्ती 16:18)। उसे अब यहां तक सीमित कर दिया गया है कि वह मसीही लोगों को एक सीमा तक सता सकता है। अब वह उनकी इच्छा के विरुद्ध प्रवेश करके उन पर नियन्त्रण नहीं कर सकता, जैसे वह प्रेरितों के समय में करता था। वह मसीही लोगों को उनके सहने से बाहर परीक्षा में नहीं डाल सकता (1 कुरिन्थियों 10:13; 2 पतरस 2:9)। यदि विश्वासी लोग शैतान का सामना करें तो वह उनके सामने से भाग जाएगा (याकूब 4:7; देखें इफिसियों 6:16)। पिछले एक पाठ में हमने देखा था कि क्रूस के कारण शैतान से भाइयों पर आरोप लगाने का अधिकार ले लिया गया (प्रकाशितवाक्य 12:12)।[37] हमारे इस वचन पाठ में ज़ोर खोए हुओं को भरमाने के सम्बन्ध में शैतान के सीमित किए जाने पर है। सुसमाचार का प्रकाश किसी की भी आंखों को खोलकर जो इसे मानने को तैयार हैं शैतान की योजनाओं को सामने लाकर (2 कुरिन्थियों 2:11) अन्धेरे को छितरा देता है।[38]

पुराने समय में आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले उदाहरण में शैतान के बान्धे जाने की तुलना एक ज़ंजीर पर एक खतरनाक पशु के डाले जाने से की जाती थी। प्रचारक आमतौर पर ध्यान दिलाते थे जब तक हम पशु की पहुंच से बाहर रहते है, वह जन्तु चिंघाड़ता और चिल्लाता है, परन्तु वह हमें हानि नहीं पहुंचा सकता। परन्तु यदि हम उसके इलाके में चले जाएं तो वह चाहे बन्धा हुआ हो या नहीं वह हमारे टुकड़े-टुकड़े कर सकता है। इस उदाहरण का इस्तेमाल इतनी बार हुआ है कि यह घिसा-पिटा लग सकता है। घिसा-पिटा हो या न परन्तु आज भी इसका महत्व है। जब तक हम प्रभु के झुण्ड के लोग हैं, "धर्म के मार्गों में" (भजनसंहिता 23:3) विश्वास से अच्छे चरवाहे के पीछे चलते हैं तो शैतान हमारे जीवनों पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता।[39] उसके विषय में "जो परमेश्वर

से उत्पन्न हुआ [है]," यूहन्ना ने कहा कि "दुष्ट उसे छूने नहीं पाता" (1 यूहन्ना 5:18)। परन्तु यदि हम झुण्ड से भटक जाएं तो वह "गरजने वाला सिंह" (1 पतरस 5:8) हमारे चिथड़े कर सकता है।

एक बार फिर वचन के अपने पाठ में वापस चलते है: अजगर को बान्धने क बाद, स्वर्गदूत ने अजगर को "अथाह कुंड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी,[40] कि वह जाति के लोगों को फिर न भरमाए" (20:3क)। बन्द, मुहर लगा अथाह कुण्ड बाद में शैतान की "कैद" बताया गया (20:7)। पकड़ना, बन्द करना और मुहर लगाना केवल इस विचार को बढ़ाने के लिए विचार हैं कि शैतान की गतिविधि सचमुच सीमित कर दी गई थी, जिसमें यह सम्भावना नहीं थी कि वह उस पर लगी ईश्वरीय पाबन्दियों को किसी प्रकार तोड़ सकता था। (अथाह कुण्ड में फैंका गया शैतान का चित्र देखें।)

सांकेतिक "थोड़ी देर"?

वचन का हमारा पाठ उलझाने वाले शब्दों "हज़ार वर्ष के पूरे होने तक अवश्य है, कि थोड़ी देर के लिए खोला जाए" (आयत 3ख) से समाप्त होता है। "जाए" यूनानी शब्द से लिया गया है, जो "नैतिक अनिवार्यता" का संकेत देता है। शैतान के "थोड़ी देर के लिए" छोड़ने का अर्थ जो भी हो यह परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों का भाग था। शायद "थोड़ी देर के लिए" वाक्यांश "हज़ार वर्ष" से भिन्नता करने के लिए उद्देश्य से है, जिसमें शैतान का "छोड़ा जाना" उसके "बान्धे जाने की तुलना में" थोड़ी देर के लिए और कम महत्व पूर्ण था।

शैतान का छोड़ा जाना और अन्त में उसके विनाश का विवरण 20:7-10 में दिया गया है। इन वचनों का अध्ययन हम अगले एक पाठ में करेंगे।

सारांश

अभी के लिए मैं इस अवधारणा पर ध्यान देना चाहता हूं कि आज शैतान बन्धा हुआ है। क्रूस के द्वारा उसे पराजित कर दिया गया था। जो हमें छुड़ाता है उसी ने शैतान को बान्धा![41] इससे हमें आनन्दित होना चाहिए।

इसके अलावा इससे हमें अपने कार्यों की निजी ज़िम्मेदारी को भी मानना आवश्यक है। कई लोग यह कहकर कि शैतान ने "उनसे करवाया है" अपने पापों से बचने की कोशिश करते हैं। शैतान धमका सकता है, भरमा सकता है, और झूठी आशा दे सकता है, परन्तु शैतान किसी से कुछ *करवा* नहीं सकता। वह बन्धा हुआ है। इसलिए हम में से हर कोई अपने कार्यों के लिए ज़िम्मेदार है। एक दिन "हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देखा" (रोमियों 14:12)। यदि आप खोए हुए हैं तो आप इसका आरोप किसी और पर नहीं बल्कि अपने आप पर ही लगा सकते हैं![42]

टिप्पणियां

[1]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 249. [2]सदर्न हिल्स चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, अबिलेन, टैक्सस (30 जून 1991) में दिया जॉन रिस्से का संदेश "द मीनिंग ऑफ़ द मिलेनियम।" [3]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 45. [4]डगलस एज़ल, *रैवलेशंस ऑन रैवलेशन: न्यू साउंड्स फ्रॉम ओल्ड सिंबल्स* (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1977), 88-89. [5]डब्ल्यू. बी. वेस्ट जूनि., *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लासिस,* संपा. बॉब प्रिचर्ड (नैशविल्ले: गास्पल एडवोकेट कं., 1997), 133. [6]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पाठ "प्रकाशितवाक्य की सात बातें, जो आपको पता होनी चाहिए" में देखें। [7]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ रैवलेशन, लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 287 से लिया गया। [8]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" का पाठ "परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम जीत गए!" देखें। [9]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" का पाठ "अपने शत्रु को जानें" देखें। [10]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" का पाठ "परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम जीत गए!" देखें।

[11]जैसा कि हम देखेंगे, अध्याय का आरम्भ यीशु की सेवकाई के दौरान शैतान के बान्धे जाने से होता है। हमने पहले देखा था कि अध्याय की समाप्ति उसी "लड़ाई" से होती है, जिससे अध्याय 19 समाप्त होता है। [12]प्रीमिलेयनलिस्ट लोगों को यह एक समस्या लगता है और वे अध्याय 19 में रोमी साम्राज्य के उन "मेहराबदार" लोगों की बात करते हैं जो नष्ट नहीं हुए थे, चाहे वचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है। [13]रेअ समर्स, *वर्धी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 202. [14]कइयों का मानना है कि यह स्वर्गदूत मसीह है, पर वचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि वह प्रभु द्वारा अपनी बात कहने के लिए स्वर्ग के कई दूतों में से एक था। [15]"फिर मैंने देखा" शब्द पूरे प्रकाशितवाक्य में इस्तेमाल और विशेषकर एक नये विचार का परिचय देने के लिए इस भाग में विशेष साहित्यिक ढंग है (देखें 20:1, 4 [दो बार], 11, 12; 21:1, 2)। [16]मूल धर्मशास्त्र में "उसके हाथ पर" है। हमें सम्भवतया स्वर्गदूत के फैले हुए हाथ पर रखी ज़ंजीर के सिरे के नीचे लगते दिखाना होगा। [17]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" के पाठ "पाप का स्व-विनाकारी स्वभाव" में अथाह कुण्ड पर नोट्स देखें। [18]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पाठ "प्रभु पहचानता है" में यीशु के पास "मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां" (1:18) होने पर नोट्स देखें। [19]वेस्ट, 133. [20]"येल" ताले का एक ब्राण्ड है; इसकी जगह किसी ऐसे ब्राण्ड का नाम रख लें जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों (जैसे हैरिसन ताले-अनुवादक)।

[21]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 352. [22]पवित्र शास्त्र में "हज़ार" शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर अलंकार के रूप में हुआ है। उदाहरण के लिए देखें भजन संहिता 50:10. आज भी हम इस शब्द का इस्तेमाल सांकेतिक रूप में करते हैं, जैसे "मैंने तुझ से *हज़ार* बार कहा है!" [23]थॉमस एफ. टॉरैंस, द *अपोकलिप्स* टुडे (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 133. [24]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पाठ "यहां अजगर होंगे" के अन्त में "दस" पर चर्चा देखें। [25]पुराने नियम से परिचित पाठकों के मन में तम्बू का परम पवित्र स्थान आया होगा जिसे दस हाथ लम्बा, दस हाथ चौड़ा और दस हाथ ऊंचा अर्थात पूर्ण हाथ माना जाता था। (मन्दिर में परम पवित्र स्थान बीस हाथ लम्बा, बीस हाथ चौड़ा और बीस हाथ ऊंचा था [1 राजा 6:20] आमतौर पर मन्दिर का नाप तम्बू से दोगुणा होता था।) [26]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" के पाठ "हाल ही में किसी अजगर को मारा है क्या?" में 12:9-12 पर नोट्स देखें। [27]वही। [28]प्रेरितों 5:3; 2 कुरिन्थियों 2:11; 11:4; इफिसियों 2:2; 6:11; 1 थिस्सलुनीकियों 2:18; 2 तीमुथियुस 2:26; 1 पतरस 5:8; प्रकाशितवाक्य 2:13; 3:9. [29]एक लेखक ने विश्वास न किए जाने वाली बात "शैतान को बान्धा गया और मसीह *अब* राज कर रहा है?" कही, जिसकी उसे समझ नहीं थी कि वह क्या कह रहा है। शैतान के बान्धे जाने पर आपत्तियां वही हैं, जो लोग

मसीह के इस समय राज करने पर करते हैं। *टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशिवताक्य, 2" के पाठ "अन्तिम तुरही" में प्रभु के अब राज करने पर चर्चा देखें। [30]प्रेरितों 27 और 28 के साथ अपनी पहली कैद के दौरान पौलुस की लिखी पत्रियां इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन पढ़ें।

[31]होमेर हेली ने शैतान के बान्धे जाने को "दण्डात्मक" नहीं, बल्कि "रक्षात्मक" कहा (होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979], 391)। [32]आप शैतान के बान्धे जाने पर पहले दी गई आयतों को देख सकते हैं इसलिए मैं अगले सारांश में उनका विशेष हवाला नहीं दूंगा। यदि आप इस सामग्री का इस्तेमाल क्लास या सरमन में करते हैं तो सुनने वालों को यही लाभ नहीं मिलेगा; सो आप उन्हें इस सारांश को बताते हुए उन आयतों का ध्यान दिला सकते हैं। [33]*टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशिवताक्य, 2" के पाठ "हाल ही में किसी अजगर को मारा है क्या?" में 12:11 पर टिप्पणियां देखें। [34]*टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशिवताक्य, 2" में "हाल ही में किसी अजगर को मारा है क्या?" और "युद्ध लगा हुआ है!" पाठ देखें। [35]बान्धे जाने के बाद भी शैतान मसीही लोगों को मारता रहा। [36]ओवन एल. क्राउच, *एक्सपोजिटरी प्रीचिंग एण्ड टीचिंग: रैवलेशन* (जौप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1985), 348. [37]*टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशिवताक्य, 2" में "हाल ही में किसी अजगर को मारा है क्या?" पाठ में आरोप लगाने वाले के रूप में शैतान पर नोट्स देखें। [38]आप और अतिरिक्त ढंगों पर विचार कर सकते हैं, जिनमें शैतान को सीमित किया गया है। एकदम से मसीही लोगों का संदर्भ ध्यान में आता है, जो शैतान के प्रभाव से शहीद हुए थे वे मसीह के साथ राज कर रहे थे। इस प्रकार शैतान को इतना ही सीमित किया गया है कि वह मसीही लोगों के साथ यह कुछ कर सकता है: वह उनकी हत्या कर सकता है, परन्तु उन्हें नष्ट नहीं कर सकता। वह उनके जीवनों का अन्त कर सकता है परन्तु उनकी विजय को रोक नहीं सकता। [39]वह हमें शारीरिक रूप में तो मार सकता है, परन्तु जब तक हम प्रभु के निकट रहते हैं तब तक हमें आत्मिक रूप में नष्ट नहीं कर सकता। [40]दर्शन में अथाह कुण्ड को वैसे ही मुहरबन्द किया गया था जैसे मसीह की कब्र को किया गया था (मत्ती 27:66)। जैसे मुहर लगने से यह सुनिश्चित होता था कि कोई उस मुहरबन्द क्षेत्र में चुपके से न तो प्रवेश कर सकता है और न वहां से जा सकता था।

[41]एल्डर्ड, एकोल्स, *हैवन्ट यू हर्ड? देअर'स ए **वार** गोइंग ऑन!: अनलॉकिंग द कोड टू रैवलेशन* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग, 1995), 44 से लिया गया। [42]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो सुनने वालों को बताएं कि प्रभु की आज्ञा कैसे माननी है और उनसे ऐसा करने का आग्रह करें। इस पुस्तक में पहले आए पाठ "हे मेरे लोगो, इसमें से निकल आओ" के अन्तिम शब्द देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आपने प्रकाशितवाक्य 20 के सम्बन्ध में या इस अध्याय में वर्णित एक हज़ार वर्ष के विषय में कोई असामान्य विचार सुना है?
2. अपोकलिप्टिक साहित्य की प्रकृति पर और संकेतों के द्वारा इसका संदेश भेजे जाने के ढंग पर विचार करें। यह अध्याय 20 से कैसे मेल खाता है?
3. प्रकाशितवाक्य आरम्भ से अन्त तक कालक्रमिक है? कालक्रम का प्रश्न अध्याय 20 से कैसे मेल खाता है।
4. 20:1-10 का मुख्य संदेश क्या है? पाठ में यह सुझाव कैसे मिलता है कि यह एक रोमांचकारी संदेश है?
5. अथाह कुण्ड के बारे में जो कुछ हमने अध्ययन किया है, उसकी समीक्षा करें। क्या वह अथाह कुण्ड आग और गन्धक की झील (नरक) है?

6. क्या कुंजी और ज़ंजीर सचमुच की हैं ? 20:1-10 में आप और कौन से संकेत देख सकते हैं ?
7. 20:2 में अजगर कौन है ? अजगर के विवरण के लिए इस्तेमाल किए गए शब्दों के महत्व पर विचार के लिए 12:9 पर टिप्पणियों के लिए वापस जाएं।
8. ''दस'' अंक का सांकेतिक महत्व क्या है ? ''एक हज़ार'' अंक का सांकेतिक महत्व क्या है ?
9. मत्ती 12:9 के संदर्भ की समीक्षा करें। कहानी बताने के लिए तैयार रहें। बलवन्त को बान्धने के यीशु के उदाहरण का क्या महत्व था ?
10. पाठ में सिखाया गया है कि शैतान का बान्धा जाना यीशु के जन्म से आरम्भ हुआ और इसका चरम उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने से हुआ। यह देखने के लिए कि उन वचनों में यही सिखाया गया है, उन्हें फिर से देखें।
11. क्या ''बान्धा जाना'' शब्द का अर्थ ''पूरी तरह से पंगु बनाना'' और ''काम करने के अयोग्य'' बनाना है ?
12. आज जातियों को भरमाने के सम्बन्ध में शैतान किस अर्थ में ''बन्धा'' है ?
13. शैतान के आज सक्रिय होने के बावजूद कौन से कुछ ऐसे ढंग हैं, जिनमें वह ''बन्धा'' हुआ है ?
14. या आपको लगता है कि ज़ंजीर पर पशु का उदाहरण सहायक है ? निजी ज़िम्मेदारी के बारे में यह उदाहरण क्या कहता है ?

अथाह कुण्ड में फेंका गया शैतान का चित्र देखें। (20:3)